गोविभा

गोविज्ञान भारती का
संदेशवाहक मासिक

वर्ष : 11 ● अंक : 5 | सम्पादक : नरेन्द्र दुबे, डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे 20 अगस्त, 2013

बैलों को खायेंगे तभी ट्रैक्टर चलेगा

- विनोबा

कुछ लोग पूछते हैं, 'हिंदुस्तान कृषि प्रधान देश है, इसलिए खेती के वास्ते बैल चाहिए और बैल चाहिए तो गाय भी चाहिए, इत्यादि विचार श्रेणी तो ठीक है, मगर क्या हिंदुस्तान का यही एक अर्थशास्त्र हो सकता है ? क्या दूसरा कोई अर्थशास्त्र ही नहीं हो सकता ? समय आने पर हम खेती का काम ट्रैक्टर से क्यों न करें?''

तो मैं पूछता हूं कि ट्रैक्टर चलेंगे तो बैल का क्या होगा ? जवाब मिलता है, ''बैल को हिंदुस्तान के लोग खा जायें। हिंदुस्तान के लोग दूसरे कई जानवरों का मांस खाते हैं, उसी तरह बैल का मांस भी खा सकते हैं। यह रास्ता क्यों न अपना लिया जाये ?'' इस तरह जब बैलों को खा जाने की व्यवस्था होगी, तभी ट्रैक्टर द्वारा जमीन जोतने की योजना हो सकती है। कहा जाता है कि बैलों को अगर हिंदू नहीं खायेंगे, तो गैर-हिंदू खायें। आज भी हिंदू गाय को बेचते ही हैं। खुद तो कसाई से पैसा लेते हैं और गोहत्या का पाप उसे देते हैं। ऐसी सुंदर आर्थिक व्यवस्था उन्होंने अपने लिए बना ली है। हम भैंस से दूध लेंगे, बैलों को खा जायेंगे और यंत्रों से खेती करेंगे - इस तरह तीनों का सवाल हल हो जायेगा।

इसके जवाब में मैं आप लोगों को समझाना चाहता हूं कि बैलों को क्यों नहीं खाना चाहिए ? मैं मानता हूं कि हिंदुस्तान की आज जो हालत है और आगे उसकी जो हालत होने वाली है, उस हालत में अगर हम मांस का प्रचार करेंगे और यंत्र से खेती करेंगे, तो हिंदुस्तान और हम जिंदा नहीं रह सकेंगे। यह समझने की जरूरत है। हिंदुस्तान के सभी लोग अगर गाय-बैल खाने लगेंगे, तो कितने प्राणियों की जरूरत होगी ? उतने बैलों की पैदाइश हम यहां नहीं कर सकेंगे। सिर्फ मांस या गोश्त खाने का ढोंग तो नहीं करना है। मांस अगर खाना है तो वह हमारे भोजन का नियमित हिस्सा होना चाहिए। तभी तो उससे अपेक्षित लाभ होगा। लेकिन हम जानते हैं कि सब लोग खा सकें इतने बैल यहां पैदा नहीं हो सकेंगे। अगर हम इस तरह करने लगें और खेती ट्रैक्टर से होने लगी, तो ट्रैक्टर का खर्च बढ़ेगा और गोश्त भी पूरा नहीं पड़ेगा और आखिर में गाय और बैल का वंश ही नष्ट हो जाएगा और उसके साथ मनुष्य भी।

.....जिस मनुष्य की चित्तशुद्धि नहीं हुई है, वह गो-सेवा का अर्थ क्या समझेगा ? स्वार्थ की दृष्टि से वह गो को संभालेगा। दूध पीयेगा, खाद लेगा, बछड़ों से खेती करवायेगा, मरने के बाद हड्डी, चमड़े का उपयोग कर लेगा। लेकिन यह कोई गो-सेवा का अर्थ नहीं है। गो-सेवा यानी अहिंसा की, प्रेम की शक्ति को व्यापक बनाना, विश्व तक फैलाना। इसका अभ्यास करना यह गो-सेवा का उद्देश्य है। गौ तो इसके लिए प्रतीक है, मूर्ति है। यह जो गो-सेवा का, गो-रक्षा का विशाल अर्थ है, उसे स्वार्थी मनुष्य, जिसकी जरा भी चित्तशुद्धि नहीं हुई है, कैसे समझ सकेगा ? - विनोबा साहित्य खण्ड 18

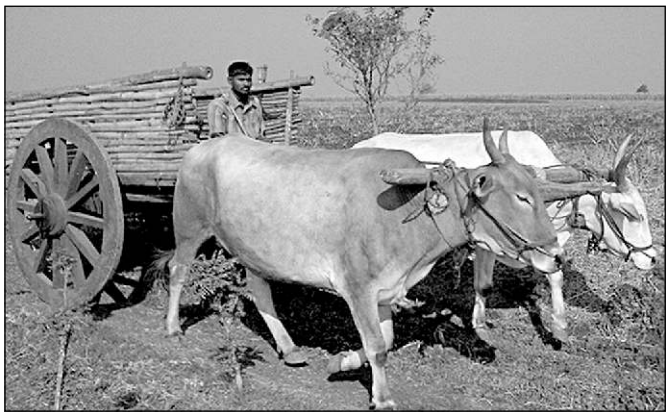

सम्पादकीय

गोरक्षा सत्याग्रह

भारत में गोरक्षण और गोसेवा की सुदीर्घ परंपरा रही है। यहां के प्राचीन धर्मग्रंथों में गोवंश की जितनी महिमा गायी गयी है, उसे मनुष्य की करुणा का विस्तार कहा जा सकता है। भारत की समन्यवकारी संस्कृति की शक्ति को पहचानकर ही मुस्लिम शासकों ने देश में गोवंश हत्याबंदी के आदेश जारी किए, जिसके अनेक प्रमाण ऐतिहासिक ग्रंथों में दर्ज हैं। मनुष्य में अहिंसा के विचार की प्रतिष्ठापना में गोवंश का योगदान अतुलनीय है। जब यहां के ऋषि को इस बात का भान भी नहीं था कि विश्व कितना है, तब उसके मुंह से उद्गार निकले 'गावो विश्वस्य मातर:' अर्थात गाय विश्व की माता है। इस मंत्र के आधार से भारतीय ग्रामीण संस्कृति अपना जीवनरस पाती रही है। किसी एक देश में विविध नस्लों का गोवंश आवश्यकता के अनुरूप वहीं विकसित हो सकता है, जहां वैज्ञानिक दृष्टि संपन्न ऋषि-मुनि हों। लेकिन हमें यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि हमने उनके द्वारा विकसित गोविज्ञान को पूरी तरह उपेक्षित किया। एक तरह से हमने अपने जीवनाधार को समाप्त करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। दुनिया की जिह्वा के स्वाद को साधने और डॉलर की माला पहनने में हमने यह तक खयाल नहीं रखा कि हम जिस शाखा पर बैठे हैं उसे ही काटने में लगे हुए हैं। गोवंश रक्षा का प्रश्न स्वराज्य से भी कठिन है यह वाक्य सच जान पड़ता है। गुलाम भारत में तो गोवंश हत्या होती ही थी, आजाद भारत में भी वह निरंतर जारी है। गोवंश रक्षा के लिए न जाने कितने ज्ञात-अज्ञात गोसेवकों ने अपनी प्राणों की आहुति दे दी, परंतु यह प्रश्न आज भी अपना उत्तर तलाश रहा है। संत विनोबा ने भूदान आंदोलन के सौम्य सत्याग्रह के बाद देश में संपूर्ण गोवंश हत्याबंदी के लिए 11 जनवरी 1982 से मुम्बई स्थित देवनार कतलखाने के सामने 12 साथियों को सत्याग्रह करने का आदेश दिया था। 'मियां' की उपाधि से विभूषित श्री अच्युत देशपाण्डे काका को सत्याग्रह का संयोजक बनाया गया। इस सत्याग्रह को चलते हुए इकतीस साल हो गए। संत विनोबा ने इस देश की संसद के सामने कोई बहुत बड़ी मांग नहीं रखी। उनका यही कहना था कि देश में संपूर्ण गोहत्याबंदी होना चाहिए और मांस निर्यात बंद हो क्योंकि यह भारतीय संस्कृति का आदेश है, वह भारतीय संविधान का निर्देश है, उसके लिए भारत सरकार वचनबद्ध है और भारतीय संसद का संकल्प है। इस सत्याग्रह के पूर्व विनोबाजी ने गोहत्याबंदी को लेकर सन् 1976 में आंशिक उपवास की घोषणा की थी। विनोबा ने कहा, ''21 अप्रैल 1979 तक पं.बंगाल और केरल में अन्य प्रदेशों की तरह गोहत्याबंदी कानून नहीं बनते हैं तो 22 अप्रैल से बाबा का आमरण अनशन का निश्चय कायम है। इसमें बाबा की मृत्यु हुई और गाय बची तो अच्छा है, मृत्यु हुई और गाय नहीं बची तो भी बाबा परमेश्वर का स्मरण करके आनंदपूर्वक जायेगा। बाबा ने अपना कर्तव्य कर लिया। गाय को बचाना तो ईश्वर की कृपा पर निर्भर है।''

विनोबाजी ने तो यहां तक कहा कि 'मेरी अगर कोई आबरू है तो वह सत्याग्रही के नाते ही। दूसरी कोई आबरू मेरे पास नहीं है।' गांधी-विनोबा के विचारों के परिप्रेक्ष्य में देवनार गोरक्षा सत्याग्रह के बारे में साथियों को गंभीर चिंतन की आवश्यकता महसूस हो रही है। हम अपनी अल्प बुद्धि से विचार करेंगे और ईश्वर उसमें सही राह दिखायेगा। सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

- डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

इस अंक में ...

- सत्याग्रह की प्रक्रिया : सौम्य से सौम्यतर
- ज्येष्ठ गोसेवक श्री ओच्छवभाई सेठ का गोलोक प्रस्थान
- गौ विज्ञान संस्थान की जरूरत
- अमीरी-गरीबी दोनों पाप
- गरीबों के कल्याण का प्रश्न
- प्रेरक कहानियाँ

सत्याग्रह की प्रक्रिया : सौम्य से सौम्यतर

- विनोबा

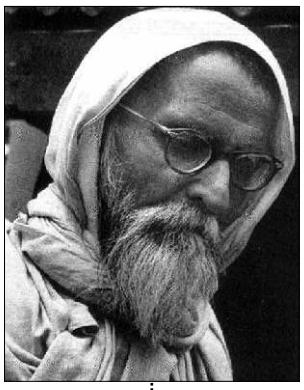

जब हम सत्याग्रह के बारे में सोचते हैं, तो करीब-करीब ऐसे ढंग से सोचते हैं कि जैसे मानव ने छोटी हिंसा से बड़ी हिंसा में और बड़ी हिंसा से अतिहिंसा में कदम रखा, वैसे ही पहले तो हम एक सौम्य-सा सत्याग्रह करेंगे। उससे काम नहीं बना तो और तीव्र सत्याग्रह करेंगे। यदि उससे भी नहीं बना, तो उससे और भी तीव्र सत्याग्रह होगा। इस तरह हम इसकी तीव्रता बढ़ाते जायेंगे। किंतु यथार्थ में हमारा चिंतन इससे बिलकुल उलटा होना चाहिए। हमने जो सौम्य सत्याग्रह शुरू किया है, अगर उससे काम बनता नहीं दिखता, तो उससे कोई सौम्यतर सत्याग्रह ढूंढेंगे, ताकि उसकी ताकत बढ़े। अगर उतने से भी काम न निभा, तो कोई और सौम्यतम सत्याग्रह निकालेंगे, जिससे उसकी ताकत और बढ़े। आपको मालूम है कि होमियोपैथी में औषधि कम मात्रा में हो और उसे घोटा जाये, बार-बार भावित किया जाये ऐसा कहते हैं। भावना से जो भावित होता है, वह सूक्ष्म-से-सूक्ष्म होता हुआ अधिकाधिक परिणामकारी होता है। हिंसा-शास्त्र में तो सोचा जाता है कि सौम्य शस्त्र से काम न चला तो उससे तीव्र शस्त्र लेने से ताकत बढ़ेगी और वह यशस्वी होगा। किंतु यहां इससे बिलकुल उलटी प्रक्रिया होनी चाहिए। ध्यान में आना चाहिए कि अगर यह काम इस तरह कामयाब नहीं हो रहा है, तो इसका मतलब यह है कि हमारी सौम्यता में कुछ न्यूनता है। इस वास्ते हमें सौम्यता और बढ़ानी चाहिए। यही सत्याग्रह का स्वरूप है।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद लोकतंत्र की आज की हालत देखते हुए और सारी दुनिया में काम करने वाली शक्तियों का सूक्ष्म दर्शन पाकर हमें सत्याग्रह की मात्रा उत्तरोत्तर सौम्य करनी होगी। सौम्य, सौम्यतर और सौम्यतम। इस तरह से अगर सत्याग्रह बढ़ता गया, तो वह अधिकाधिक कारगर और अधिकाधिक शक्तिशाली होगा।

सौम्य, सौम्यतर, सौम्यतम - यह सत्याग्रह की प्रक्रिया है। यही हमारा वज्रकवच है। उसका हमें संशोधन करना चाहिए। उस दृष्टि से हमें अधिक सौम्य, अधिक मृदु बनना होगा।

जो प्रक्रिया हिंसा में चलती है, उससे उलटी प्रक्रिया अहिंसा में चलेगी। हिंसा की प्रक्रिया अगर अहिंसा अपनाती है, तो वह हिंसा को प्रश्रय देती है।

...साधन रूप क्रिया की आसक्ति हो, लेकिन आगे की जो क्रिया है, वह समाज करेगा। जहां सामूहिक कार्य शुरू होता है, वहां उसके साथ कुछ संकल्प भी आते हैं। वे सामूहिक संकल्प होते हैं। इसमें कोई खास दोष नहीं है। परंतु धीरे-धीरे इस प्रक्रिया का जो परिणाम आया, उसे देखते हुए इससे अधिक सौम्य प्रक्रिया, अर्थात जिसमें क्रिया की तीव्रता कम होगी और विचार की प्रक्रिया अधिक होगी ऐसी कार्य पद्धति हमें धीरे-धीरे लेनी होगी। मैं मानता हूं कि शुद्ध विचार का दर्शन हमें होता है, तो 90 फीसदी काम हो गया।

हम अधिक विचारपरायण बनें और क्रिया की जो मर्यादाएं हैं, उनको ठीक समझें, तो अहिंसा अधिक फैलेगी। ऐसा हमें लगता है।

चार पहलू

अब तक सत्याग्रह का विचार मैंने चार तरह से रखा है -

1 निगेटिव सत्याग्रह अब नहीं चलेगा। सत्याग्रह पॉजिटिव होना चाहिए। स्वराज्य के पहले का सत्याग्रह का एप्रोच निगेटिव था।

2 सत्याग्रह की एक प्रक्रिया जब विफल होती है, तब उससे सौम्य प्रक्रिया हाथ में लेनी चाहिए। तीव्र नहीं लेनी चाहिए। सत्याग्रह सौम्य से सौम्यतर की ओर जाता है। यह उसकी प्रक्रिया होती है।

3 कहीं सत्याग्रह हो रहा है, यह सुनने मात्र से आनंद हो। भले बाद में दोष-दर्शन होने पर हम उसे नापसंद करें। पर उसके प्रथम श्रवण मात्र से आनंद होना चाहिए। वह मंगल प्रतीत होना चाहिए। दिल को ठंडक पहुंचनी चाहिए।

4 सत्याग्रह हमारी तरफ से नहीं, सत्य की तरफ से आग्रह होना चाहिए। हम अपने लिए ही सत्य-पालन का आग्रह रखें। सबसे सत्य मनवाने में फल की वासना है। सत्य-चिंतन का हम आग्रह रखें।

सत्याग्रह आत्मशक्ति-प्रधान

सत्याग्रह एक आध्यात्मिक शक्ति है, वह भौतिक शक्ति नहीं है और मानसिक शक्ति भी नहीं है। विज्ञान की शक्ति मानसशास्त्र को गौण बनाती है। इसलिए अब मानसिक भूमिका से उपर उठकर अतिमानस की भूमिका से सत्याग्रह की खोज करनी होगी। हम अगर

अंतर्राष्ट्रीय समस्याएं सत्याग्रह के रास्ते से हल करना चाहते हैं, तो हमें अतिमानस की भूमिका पर जाना होगा। एक व्यक्ति की आत्मा में प्रकट होने वाली, लेकिन पूरे विश्व पर प्रभाव डाल सके ऐसी शक्ति हमें प्राप्त करनी होगी। और ऐसी शक्ति किसी व्यक्ति के अतिमानस की भूमिका पर जाने से ही पैदा होगी।

हमें सत्याग्रह की शक्ति अपने जीवन में लाने की कोशिश करनी चाहिए। हममें श्रद्धा और सत्य का आग्रह होना चाहिए। हमें सत्य पर डटे रहना चाहिए। उससे निश्चय ही सामने वाले का हृदय परिवर्तन होगा और परिस्थिति भी बदल सकती है। हमें ऐसी परम श्रद्धा रखनी चाहिए। हम सारी दुनिया को आजादी और शांति की राह पर ले जाना चाहते हैं, तो हमें अपने जीवन में सत्याग्रह की शक्ति का विकास अवश्य करना चाहिए।

बाबा का योगदान

बहुतों का खयाल है कि बाबा ने गांधीजी के जमाने के सत्याग्रह में बहुत विकास किया है। गांधीजी की कल्पना अभावात्मक थी, बाबा ने उसे भावात्मक बनाया। लेकिन बाबा स्वयं यह दावा नहीं करता। गांधीजी की कल्पना निगेटिव नहीं थी।

मैंने इतना ही किया कि बापू के कुछ विचारों का विवरण करके कुछ शब्द दिये, जो चिंतन के लिए अनुकूल पड़ते हैं, और जिनसे समझने में मदद मिलती है। यदि गांधीजी के सामने चीजें पेश की जायें, और उनसे कहा जाये कि ये नये-नये शब्द निकले हैं, तो उन्हें लगेगा कि यह मेरा बेटा सच्चा विवरणकार है। उन्हें यह विश्वास होगा कि इसने मेरा अच्छा विवरण किया, कुछ बिगाड़ा नहीं है।
विनोबा साहित्य : खण्ड 16

ज्येष्ठ गोसेवक श्री ओच्छवभाई सेठ का गोलोक प्रस्थान

गोविज्ञान भारती और गोरक्षा सत्याग्रह देवनार में लंबे समय से जुड़े हुए हम दोनों को 'दो बैल की जोड़ी' के नाम से बुलाया जाता था। लेकिन कालग्रस्त होने से यह जोड़ी गुरुवार 13 जून को खण्डित हो गई। श्री ओच्छवभाई 92 वर्ष की आयु में भी निरंतर गोसेवा में लगे रहे। आखिरी के पांच साल नंदीग्राम ट्रस्ट (बलसाड़) के साथ आजीवन गोशाला की देखभाल और गोचिकित्सा करते रहे।

श्री ओच्छवभाई के साथ मेरा पहला परिचय मेरे बड़े भाई के कारण हुआ। दोनों ही सेवा कार्य करते थे। इस बात को लगभग 25 वर्ष हो गए। जब वे गृहस्थाश्रम में थे, तब वे वस्त्र-व्यापार के साथ नौकरी भी करते थे। उन्होंने गृहधर्म को अच्छी तरह निभाया। धर्मपत्नी अत्यंत धार्मिक स्वभाव की और संस्कारी थीं। वे श्रीमद् राजचंद्रजी की अनुयायी भी थीं। धर्मपत्नी के अरिहंतशरण होने के उपरांत श्री ओच्छव भाई ने 15 वर्ष एकाकी जीवन बिताया। वे आजीवन गोसेवक बन गये। वे दिन-रात गोचिंतन और गोसेवा में लगे रहे। गोविज्ञान के लिए लेखन कार्य करते रहे। गोवंश कैसे बचाया जाए, इस पर सतत विचार और कार्य करते रहे।

गोमाता की रक्षा के लिए आजकल समाज में जागृति और चेतना आयी है। इसके लिए कई संस्थाए, पांजरापोल और गोशालाएं हैं। लेकिन गोवंश का अहम साथी बैल की रक्षा के बारे में देशभर में जागृति का अभाव है। देश की आर्थिक शक्ति बैल द्वारा खेती और भारवहन व्यवस्था पर आधारित है। फिर भी इस बात पर खास ध्यान नहीं दिया गया। बैल शक्ति का पूर्ण उपयोग होने से ही बैल बचेगा - इस सोच-विचार पर श्री ओच्छवभाई का ध्यान-चिंतन और कार्य रहा। वर्षा के चार महीने सिंचाई समय में बैल का उपयोग कम होने से वह पुसाता नहीं है। ट्रैक्टर की उपस्थिति से स्थिति और गंभीर है। इस समस्या के हल के लिए हम सब गोप्रेमी साथियों ने बैल ऊर्जा यंत्र का आविर्भाव सोचा। एक्सल इंडस्ट्रीज के श्री कांतिसेन श्रॉफ की मदद से पहला यंत्र बनाया। तेल निकालने की घाणी की तरह, बैल को गोल घुमाने के बाद बिजली उत्पादित की गई। इससे कुंए से पानी निकाला गया, आटा चक्की चलाई गयी, घास काटने की मशीन चलाने का सफल प्रयोग किया। सरकार की गलत आर्थिक नीति से गोवंश हत्या बढ़ती जा रही है। मांस निर्यात और चर्म उद्योग को बढ़ावा दिया जा रहा है। यदि गोवंश हत्या बंद करना है तो उसका पूर्ण उपयोग करने की आवश्यकता है। यह सब लिखने का तात्पर्य है कि श्री ओच्छवभाई ने न सिर्फ इस विषय पर चिंतन किया बल्कि उसे व्यवहार में भी लाए। वह जानते थे कि अगर बैल नहीं बचेगा तो गाय भी नहीं बचेगी। गोवंश नहीं बचेगा तो देश भी नहीं बचेगा।

श्री ओच्छवभाई ने गोदुग्ध, गोमूत्र, पंचगव्य आधारित विभिन्न औषधियों के विकास में अपना पूरा जीवन लगाया। वे स्वभाव से संतोषी, निस्पृही स्वाभिमानी होने के साथ सर्जक, विचारक और लेखक भी थे। वर्तमान में ऐसे सेवक मिलना कठिन है। उन्होंने तन, मन और धन से गोसेवा की है। इनको सच्ची श्रद्धांजलि देना हो तो गोवंश रक्षा के लिए चलाये गये अभियान में संपूर्ण साथ देना हम सबका कर्तव्य बनता है। 'करिए तो थाय' इनका मंत्र था। प्रभु इनकी आत्मा को परम् शांति दे, यही अभ्यर्थना है। गोविभा परिवार की ओर से गोसेवक श्री ओच्छव भाई को हार्दिक श्रद्धांजलि।

अमृतलाल दोशी

गौ विज्ञान संस्थान की जरूरत

(गौमाता की वेदना की प्रस्तुति)

डॉ. रमणभाई मिस्त्री, प्राध्यापक आयुर्वेद महाविद्यालय, नालासोपारा, जिला ठाणे ।

प्रसन्नता की बात है कि भारत वर्ष में गौमाता की सेवा करने वाले कार्यकर्ता और विविध संस्थाओ के सक्रिय प्रयत्न के परिणाम विविध प्रवृत्तियां हो रही है । गौमाता की रक्षा और संवर्धन के लिए जो भी कुछ प्रयत्न हो रहे है वह सराहनीय है और बधाई के पात्र है । सभी को मेरा अभिनंदन ।

फिर भी इन प्रवृत्तियो में कुछ कमियाँ रह जाने की प्रतीति हो रही है । जिसके परिणामस्वरूप यह स्पष्ट हो रहा है कि गौमाता की संख्या में काफी बढ़त नहीं दिखाई देती है जो हमें पूर्ण रूप से संतुष्ट करे । संकर नस्ल की गौ की संख्या बढी होगी, फिर भी वह हमारे लिए सुखद नहीं है । हमारी गीर नस्ल की गौ की संख्या की बढ़त ब्राजील में हो सकती है मगर हमारे यहाँ संभव न हो सका । हमारे यहाँ कुछ काल पूर्व की स्थिति गौ की संख्या के बारे में वर्तमान में नहीं है । यह हमारे लिये दु:ख की बात है । हमारी गौ माताएं कुछ बीमारियों से पीड़ित है वह भी गौमाता के बाँझपन का कारण हो सकता है । बीमार गौ का दूध हमारे लिए भी स्वास्थ्यप्रद नहीं है । इसीलिए गोमाता की अच्छी चिकित्सा सुविधा प्राप्त हो, बीमारियों से मुक्त जीवन के लिये भारतीय पद्धति की चिकित्सा ही विशेष लाभप्रद सिद्ध होती है । जो भी जिसमें उत्पन्न होकर उसी जलवायु में रहनेवाले के लिये उसी स्थान में पानेवाली दवाइयाँ उपकारी होती है । विदेशी जलवायु में वहाँ की खोज के आधार पर बनी हुई हमारे यहाँ रहनेवाली गौमाता को अनुकूल नहीं होती। इसलिये हमारे यहाँ की आवश्यकता के अनुसार ही गौविज्ञान बनाना आवश्यक है।

दूसरी बात यह है कि गोवंश का संवर्धन करके ज्यादा दूध प्रदान करने वाली स्वदेशी वंश की गौ बडी संख्या में उपलब्ध हो, जिससे विदेशी गौ का वंश भारत में नहीं आ सके । भारतीय असली वंश की हमारे देश में बने रहे अन्यथा गौवंश का भावी अस्तित्व खतरे में है। गो पालक के लिये आवश्यक है कि गौ से अच्छा मुनाफा देने वाली आय होगी तभी उनको गोपालन करने में विशेष रुचि रखेंगे।

क्या करें? इस प्रश्न को हल करनेके लिये सुझाव है कि भारतीय स्वरूप का गोविज्ञान संस्थान, जिसमें गौ की चिकित्सा एवं अनुसन्धान का कार्य हो सके । प्रयोगशालाओं में अनुसन्धान करे बिना विज्ञान का विकास नहीं हो सकता । अर्वाचीन पशु चिकित्सा शास्त्र में प्रशिक्षित पशु चिकित्सक भी हमारे भारतीय औषधि विज्ञान के ज्ञान की आवश्यकता महसूस कर रहे है । गौ माता के कल्याण की नवीन योजना बनाने की आवश्यकता है, जिसमें विशेष रूपसे इस विषय का प्रशिक्षण प्राप्त हो, जो विशेषज्ञ प्रशिक्षित होंगे, जिनकी विशेष सेवासे भारतीय गोविज्ञान संस्थान मे गोमाता के लिये कल्याणकारी प्रकल्प का शुभारंभ होगा ।

भारतीय गोविज्ञान संस्थान - इस संस्थान के अन्तर्गत इस विषय का विशेष प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान (Research) करने की आवश्यकता है । ऐसे सम्पूर्ण साधन सुविधा वाले अनुसन्धान में गौमाता के साथ अन्य पशु जैसे कि बकरी, भैंस, घोड़े , ऊँट आदि के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। जिससे हमारे देश के पशु चिकित्सा विज्ञान में क्रान्ति होगी। विश्व में हम मार्गदर्शक गुरु सिद्ध हो सकते हैं। हम अपनी ओर से प्रारंभ करेंगे तब शासन हमें सहायता देने पर मजबूर होगा। हमारे देश के सभी गोभक्त कार्यकर्ताओं को इस विषय के बारे में सोचना है । इस विषय में विशेष अभिरुचि रखनेवाले गोप्रेमी सज्जन तथा सन्नारियों को चाहिये कि अब इस विषय की गंभीरता को समझकर क्रियान्वित किया जाए। कुछ गोसेवक आगे आकर मिलकर संकल्प करे कि ऐसा पुण्यकर्म होना ही चाहिये । मैं इस विषय में अभिरुचि रखता हूँ और कुछ सहयोग देने की उम्मीद रखता हूँ । आगे हम इस विषय में बैठकर चिन्तन करे और भावी कार्यक्रम निश्चित करें। गोविभा के माध्यम से इस विषय की चर्चा भी होती रहे । इस विचार का पाठक प्रचार करे और पत्र भी, ऐसे शुभ भावी विचारों को योग्य प्रसिद्धि देने का कष्ट करें ।

गो कांफ्रेंस नागपुर में

चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय गो कॉन्फ्रेन्स आगामी 28 से 31 अगस्त तक नागपुर के रेशम बाग मैदान में आयोजित की गई है। इसका आयोजन गो विज्ञान भारती, गो ग्राम महासंघ, कस्तूरबा हेल्थ सोसायटी सेवाग्राम, ग्राम भारती आंध्रप्रदेश, भारतीय गौसेवक समाज दिल्ली और गौ आधारित कृषक संघ ने किया है। इसमें भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागी डॉ. श्रीनिवास राव से संपर्क कर सकते है। उनका मोबाईल नं है 8186037618

अमीरी-गरीबी दोनों पाप

सर्वोदय की दृष्टि में अमीरी और गरीबी दोनों पाप हैं। लोग मानते हैं कि पिछले जन्म में कोई पाप किया होगा, इसलिए इस जन्म में गरीबी मिली है। इसी तरह यह भी मानते हैं कि पिछले जन्म में कोई पुण्य किया है, तभी इस जन्म में धनवान बने हैं। यह नहीं जानते हैं कि पुण्य का फल धन नहीं, सद्बुद्धि है। पैसे को पुण्य का फल मानना गलत विचार है। शंकराचार्य दरिद्र कुल में जन्मे थे। तो क्या यह समझें कि उन्होंने पिछले जन्म में पाप किया था ? बुद्ध भगवान समृद्ध कुल में, एक राजा के घर पैदा हुए। यदि वह पुण्य का फल था, तो उन्होंने राजपाट क्यों छोड़ दिया ?

पुण्य का परिणाम संपत्ति नहीं, सद्बुद्धि है। और पाप का परिणाम गरीबी नहीं, कुबुद्धि है। भगवान ने किसी को संपत्ति के साथ और किसी को गरीबी के साथ जन्म दिया है, तो उसकी वह आजमाइश करता है। वह देखता है कि यह संपत्ति का उपयोग ठीक करता है या नहीं। संपत्ति का उपयोग गरीबों की सेवा में करता है या लोगों को पीड़ा पहुंचाने में करता है ? अगर लोगों को सुख देने के लिए संपत्ति का उपयोग करता है, तो वह भगवान की परीक्षा में पास होता है और दूसरों को पीड़ा पहुंचाने में करता है, तो भगवान की परीक्षा में अनुत्तीर्ण होता है। भगवान श्रीमानों की परीक्षा लेता है उन्हें संपत्ति देकर और गरीबों की परीक्षा लेता है गरीबी देकर। वह देखता है कि गरीब होने पर वह 'हां जी, हां जी' करता है, दीन बनता है या मान के साथ इज्जत के साथ रहता है। अगर गरीब दीन बनता है, तो वह भगवान की परीक्षा में अनुत्तीर्ण होता है। अगर श्रीमान घमंडी और गरीब दीन नहीं बनता तो उत्तीर्ण हो जाता है। अत: गरीबों को दीन नहीं बनना चाहिए और श्रीमानों को उन्मत्त नहीं बनना चाहिए।

श्रीमान धन से धनवान हैं, श्रमशक्ति के हिसाब से गरीब हैं। गरीब पैसे गरीब हैं, तो श्रमशक्ति के हिसाब से धनी है। श्रीमान और गरीब एक-एक शक्ति है। दोनों की शक्ति का उपयोग होगा, तो बहुत लाभ होगा। शक्ति और बुद्धि का उपयोग होगा तो गरीबी मिट जाएगी।

तो, साम्ययोग में ऊँच-नीच के भेद नहीं होंगे। सब नाते बराबरी के होंगे। हम किसी के सामने दीन बनेंगे नहीं और किसी को दीन बनायेंगे नहीं। किसी से दबेंगे नहीं और किसी को दबाएंगे नहीं। ये दोनों पाप हैं। डरना पाप है और डराना भी पाप है।

गरीबों के कल्याण का प्रश्न

कल्याण वृद्धि के लिए नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो.अमर्त्य सेन तीन बातों का जिक्र करते हैं :

1. हमको राष्ट्र की प्रति व्यक्ति आय से ही विकास नहीं नापना चाहिए। यह तो महज एक औसत है। दुख की बात है कि असमान वितरण के कारण, आधे व्यक्ति इस औसत से नीचे और आधे ऊपर नहीं होते। कहीं-कहीं तो ऊपर के 10 प्रतिशत लोग अनेक अफ्रीकी देशों में राष्ट्रीय आय के 90 प्रतिशत भाग के मालिक होते हैं। अत: हमको गरीबों की औसत आय अलग से निकालना चाहिए।

2. इसके अतिरिक्त बढ़ती हुई राष्ट्रीय आय या व्यय का उतना ही भाग जो प्रत्यक्ष रूप से गरीबों को लाभान्वित करता है। उसे ही उपरोक्त प्रति व्यक्ति आय से जोड़ना चाहिए। विकास के अनेक कार्य गरीबों को छोड़ते जाते हैं जैसे कि द्रुतगामी ट्रेन छोटे स्टेशनों को छोड़ती है। अत: हमको इन गरीबों की आय बढ़ाना चाहिए। अगर 5 व्यक्तियों के औसत परिवार को पोषणमान से गरीबी नापने के लिए रुपये 20000 वार्षिक चाहिए यानि रुपये 4000 प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष या रुपये 333 प्रतिव्यक्ति प्रतिमाह या लगभग 11 रुपये प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति हो।

रु. 19999 से 15000 तक गरीब

रु. 14999 से 10000 अति गरीब

रु. 9999 से 5000 तक निपट गरीब

रु. 4999 से 1 तक सर्वहारा।

हमको विकास के लिए नीचे से चलना चाहिए और इन वर्गो को मिटाना है। तीसरी बात राष्ट्रीय आय के पुनर्वितरण की दिशा में काम करना होगा। अमीरों को अमीरी कुछ कम करके गरीबों की गरीबी मिटाना ही होगी।

प्रेरक कहानियाँ

तन को जोगी सब करें

माता के कहने पर राजा गोपीचंद ने राजपाट का त्याग किया और वह गुरु गोरखनाथ का शिष्य हो गया। पहले ही दिन गोरखनाथ ने उसे भिक्षा लाने के लिए कहा। राजा जब लोगों के पास गया, तो उसे 'राजा' जान उन्होंने मुक्तहस्त से सिक्के और आभूषण दिये। राजा ने सोचा कि मां से भी कुछ भिक्षा मिल सकती है, अत: जब वह माता के पास गया, तो उसने कहा, ''ध्यान रख, मैं एक गृहस्थ स्त्री हूं और तू एक योगी पुरुष। मैं तुझे जो भी भिक्षा दूंगी, वह तेरे पास हमेशा के लिए नहीं रह सकती। फिर भी तू मेरे द्वार पर याचक बनकर आया है, इसलिए मैं तुझे तीन बातें दे रही हूं, तू उन्हें उपदेश मानकर ग्रहण कर। पहली बात यह कि रात को मजबूत किले में रहना, दूसरे स्वादिष्ट भोजन ही ग्रहण करना और तीसरे, नर्म-मुलायम बिस्तर पर पड़े रहना।'' गोपीचंद ने सुना तो हैरान रह गया, बोला, ''मां, मैं तो तेरे उपदेश से साधु बना था और अब तू ही मुझे ऐसा उपदेश दे रही है, मानो तू एक साधु को नहीं, बल्कि राजा को दे रही है।''

माता बोली, ''योगी, तूने मेरी बातों को गलत समझा। मजबूत किले का अर्थ है - राजा समान भोग-विलास में न पड़कर अपने गुरु की संगति में रहना। गुरु की संगति से बढ़कर मजबूत किला कोई नहीं है। ऐसे मजबूत किले में रहने से तेरे मन में जरा भी कुविचार नहीं उठेंगे। दूसरी बात का आशय यह है कि थोड़ा ही खाना और भूखे रहना। तू जो भी रूखा-सूखा खाएगा, वही तेरे लिए स्वादिष्ट रहेगा ओर तीसरी बात कि नर्म-मुलायम बिस्तर पर सोना - इसका मतलब यह है कि तुझे दिन-रात जागते रहना चाहिए। जहां भी नींद आए, उसी जगह पर सो जाना, फिर वहां कंकड़ और पत्थर क्यों न हों। नींद आने पर ये तेरे लिए नर्म-मुलायम बिस्तर के ही समान होंगे और तेरी नींद में ये जरा भी बाधाक न होंगे।''

सबतें कठिन राजमदु भाई

ओरछा नरेश मधुकरशाह महात्मा व्यासदेव से बड़े प्रभावित थे और उन्हें राजगुरु-पद पर प्रतिष्ठित किया। किंतु वीतरागी संत का मन भला राजवैभव में कैसे रमता ? वे एक दिन वृंदावन जा पहुंचे और संत हितहरिवंश से दीक्षा लेकर वहीं वास करने लगे। बात जब नरेश को मालूम हुई, तो उन्हें बड़ा दु:ख हुआ। उन्हें वापस लाने के लिए उन्होंने मंत्री को वृंदावन भेजा। मंत्री ने संत हित हरिवंश को सारी बातें बतायीं और व्यासदास को वापस ले जाने की उनसे आज्ञा भी प्राप्त कर ली। यह बात जब व्यासदासजी को मालूम हुई, तो उन्हें बड़ा दु:ख हुआ। उन्होंने अपने मुख पर कालिख पोत ली और एक गधे पर बैठकर वे गुरु के पास गये।

गुरु ने जब देखा, तो पूछा, ''यह क्या स्वांग रचा रखा है तुमने?'' व्यासदेव ने उत्तर दिया, ''मैंने जिन चरणों का आश्रय लिया है, वे ही जब मुझे वृंदावन से बाहर भेज रहे हैं, तो मैंने सोचा कि अपना मुंह काला कर और गधे की सवारी करके क्यों न राजवैभव का भोग लेने वापस जाऊं ? गुरु ने उनकी दृढ़ इच्छा देखकर मंत्री से अनिच्छा व्यक्त की। किंतु राजा को एक संत पुरुष का अपने राज्य से चले जाने का बड़ा दु:ख हो रहा था, अत: वे स्वयं वृंदावन जा पहुंचे और उन्होंने व्यासदासजी से वापस चलने की न केवल प्रार्थना की, बल्कि उनके अस्वीकार करने पर उन्हें पालकी में बिठाकर ले जाना चाहा। तब उनके मुख से यह शब्द निकल पड़े -

मोसों पतित न अनत समाई।

याही ते मैं श्रीवृंदावन की सरन गह्यो है आई।

अब राजा को भी विश्वास हो गया कि संत ओरछा में एक पल भी नहीं रह सकते। उन्होंने संत को अपने साथ ले जाने का विचार त्याग दिया और उनसे क्षमा मांगी।

गुरु कहे सो कीजिए

सिक्ख गुरु अमरदासजी बूढ़े हो चले थे, उनकी उम्र भी 105 साल के लगभग हो गयी थी। तब उनके शिष्य सोचा करते, ''मैंने गुरु की काफी सेवा की है, इसलिए यदि गद्दी मुझे सौंप दी जाए, तो कितना अच्छा होगा!'' एक दिन गुरु साहब ने शिष्यों को बुलाकर कहा, ''तुम लोग अलग-अलग अच्छे चबूतरे बनाओ।'' शिष्यों ने जब चबूतरे बनाये, तो उन्होंने उनका निरीक्षण किया और कहा, ''इनमें से एक भी अच्छा नहीं है। इन्हें तोड़ो और दूसरा बनाओ।'' शिष्यों ने उन चबूतरों को तोड़ा और फिर से बनाना शुरू किया, किंतु गुरु साहब को उनमें से एक भी पसंद न आया और उन्होंने फिर बनाने को कहा। ऐसा कई बार हुआ। शिष्य चबूतरे बनाते और गुरु साहब उन्हें तोड़ने को कहते। आखिर शिष्य निराश हो गये और सोचा, ''गुरु बूढ़े हो गये हैं, इसलिए उनकी अक्ल ठिकाने नहीं है।'' वे सब उठकर जाने लगे, किंतु शिष्य रामदास अभी भी चबूतरा बनाने में जुटा हुआ था। उन लोगों ने उससे कहा, ''इस पागल का हुक्म मानकर तुम भी पागल क्यों बन रहे हो ? चलो छोड़ दो चबूतरा बनाना।'' रामदास ने जवाब दिया, ''अगर गुरु पागल है, तो किसी का भी दिमाग दुरुस्त नहीं रह सकता, किसी की अक्ल ठीक नहीं रह सकती। हमें तो यही सीख मिली है कि गुरु ईश्वर का ही दूसरा रूप है और उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। अगर गुरु सारी जिंदगी भी चबूतरा बनाने का आदेश दे, तो रामदास जिंदगी भर चबूतरा बनाता रहेगा।'' और वह चबूतरा बनाने में मग्न हो गया।

कहा जाता है कि रामदास ने लगभग सत्तर चबूतरे बनाये और अमरदास जी ने उन सबको तुड़वाकर फिर से बनाने का आदेश दिया। गुरु ने उसकी लगन और भक्ति देख उसे छाती से लगाकर कहा, ''तू ही सच्चा शिष्य है और तू ही गद्दी का अधिकारी होने के काबिल है।''

स्वास्थ्य समाचार

इन्दौर। सर्वोदय सेवक श्री नरेंद्र दुबे का स्वास्थ्य अब पहले से बेहतर है। पिछले दिनों उन्होंने दो ताकू का चरखा चलाने की इच्छा जाहिर की थी। एक पुराना दो ताकू का चरखा रखा हुआ था। उसे ठीक किया जा रहा है। चरखे को देखते ही उनकी बांछे खिल गयीं। अपने बायें हाथ से चलाकर उन्होंने उसे देखा-परखा और कहा कि इसे तेल इत्यादि देकर ठीक करो। चरखे में पोनी लगा दी गयी है। दो-एक दिन उसे ठीक करने में लगेंगे। विगत दिनों संत मुरारी बापू की कथा का आयोजन इन्दौर में हुआ। इसका टीवी पर जीवंत प्रसारण हुआ। वे ठीक 9:30 बजे संस्कार टीवी चैनल लगाते और 1:30 बजे तक एकाग्र चित्त होकर राम कथा सुनते। संत मुरारी बापू की कथा के केंद्र में विनोबाजी रहे। कथा के शुभारंभ अवसर पर उन्होंने विनोबाजी का विशेष उल्लेख किया। उनकी कथा सत्य, प्रेम, करुणा के इर्द-गिर्द ही रही। आखिरी दिन उन्होंने प्रेम तत्व की सविस्तार व्याख्या की। इसके साथ ही संत मुरारी बापू ने समाज में बढ़ती संवादहीनता को दूर करने में राम कथा का महत्व बताया। दुनिया की समस्याएं संवाद से ही हल होंगी। पूरी कथा में अनेक बार ऐसे क्षण आए जब संत मुरारी बापू भाव विह्वल हो गए। भजन के दौरान नरेंद्र भाई की आंखें भी नम हुए बिना न रह सकीं। उनके चित्त में समाधान और प्रसन्नता है।

खादी मिशन की सभा अहमदाबाद में

खादी मिशन की सभा 8 और 9 सितंबर को साबरमती आश्रम अहमदाबाद में आयोजित की गई है। खादी मिशन के संयोजक श्री बालविजय जी ने बताया कि भारत सरकार ने देशी-विदेशी वित्तीय संगठनों के सहयोग से ऐतिहासिक खादी संस्थाओं के सार्वजनिक ट्रस्टों को मुनाफा केंद्रित निजी कंपनियों में परिवर्तित करने का निणर्य लिया है। इससे खादी कार्य के लिए महात्मा गांधी ने जो नैतिक आदर्श और सिद्धांत प्रतिपादित किए थे, वे सभी समाप्त होंगे। राष्ट्रपिता की ऐतिहासिक खादी की सुरक्षा के बारे में विचार करने के लिए क्रांतिकारी खादी के उद्‌गम स्थान साबरमती आश्रम अहमदाबाद गुजरात में खादी मिशन की सभा होगी। इसमें ऐतिहासिक विरासत की खादी की सुरक्षा, प्रगति, प्रचार-प्रसार की दिशा, उपाय, पद्धति तथा सुलभ प्रबंधन, राष्ट्र के पुनरुत्थान, पुनर्निर्माण और आध्यात्मिक उन्नति के कार्य हेतु खादी संस्थाओं के सिद्धांत, स्वायत्तता, स्वतंत्रता की सुरक्षा विषय पर विचार किया जाएगा। सभा दिनांक 8 की सुबह प्रारंभ होकर 9 की दोपहर तल चलेगी। पहुंचने की सूचना निम्नलिखित पते पर दी जा सकती है : श्री चौधरीजी, मंत्री, गुजरात खादी ग्रामोद्योग संघ, मार्फत खादी घर, उस्मानपुरा, चार रास्ता, अहमदाबाद - 31।, टेलीफोन नंबर है : 079-27550941, मोबाइल नंबर है : 094268 73748

अपील

प्रिय मित्रों,

किसी भी वैचारिक मासिक पत्रिका का निरंतर 10 वर्षों तक प्रकाशित होते रहना गौरवपूर्ण उपलब्धि से कम नहीं है। यह आप सभी की सहभागिता और मार्गदर्शन से ही संभव हो पाया है। समाज में व्याप्त वैचारिक शून्यता की पूर्ति में **गोविभा** पत्रिका कहाँ तक सफल हुई यह तो सुधी पाठक ही बता पाएंगे। नए वर्ष में प्रवेश करते हुए गोविभा परिवार से यह अपील है कि वे इसके आजीवन सदस्य बनें। गोविभा पत्रिका की आजीवन सदस्यता राशि रु. 1,000 है। सहयोग राशि 50 रु है। सुधी पाठक **गोविज्ञान भारती** के नाम का ड्राफ्ट बनाकर डी-37, सुदामानगर, इन्दौर के पते पर भेज सकते हैं। आजीवन सदस्यता हेतु संपर्क करें- 097542-20781

—संपादक

प्रकाशक :
नरेन्द्र दुबे, कार्याध्यक्ष, गोविज्ञान भारती
द्वारा मुंबई सर्वोदय मण्डल, 299, ताड़देव रोड, नानाचौक
मुंबई-400 007, फोन : (022) 23872061

डी-37, सुदामा नगर, इन्दौर-452 009
फोन : 0731-2489475, मो.: 97542 20781
www.govigyan.org ● e-mail : vinobaji1@gmail.com
prof.pushpendra@gmail.com

मुद्रण : श्रीकृति ग्राफिक्स, बी-133, सुदामानगर, इन्दौर
मो.: 98269 51703

आजीवन शुल्क : 1,000 ● वार्षिक शुल्क : रु. 50 ● एक प्रति : रु. 5

गोविभा

रजि. MPHIN/2003/11246
पोस्टल रजि.आई.सी.डी. (एम.पी.) 1106/12-14

सेवा में,